अध्याय 11

कुड़कुड़ाना और बुड़बुड़ाना

सीनै पर्वत से कनान की ओर अपनी यात्रा आरम्भ करने के बाद (10:11), इस्राएली लोग तीन दिनों तक यात्रा करते रहे जब तक उन्होंने "विश्राम का स्थान" नहीं खोज लिया (10:33)। उस स्थान में पहुँचने पर उन्होंने कुड़कुड़ाने और बुड़बुड़ाने के द्वारा परमेश्वर के विरोध में पाप किया (11:1)। अन्ततः उनके पाप के प्रत्युत्तर में परमेश्वर ने लोगों को "बहुत बड़ी मार से मारा" (11:33)। उनके पाप और उसके पश्चात दण्ड के कारण उन्हें वहाँ पर मिट्टी दी गई। इस कारण उस स्थान का नाम "किब्रोथत्तावा," कहलाया जिसका अर्थ है "तृष्णा की कबरें" (11:34)।

अगर हम गिनती की पुस्तक को पहली बार पढ़ रहे हैं और हमें आगे की घटनाओं की जानकारी नहीं है तो हो सकता है कि हम इस अध्याय की घटनाओं से आश्चर्यचकित हो जाएँ। ये वे ही इस्राएली थे जो इस पुस्तक में इस बिन्दु तक परमेश्वर की आज्ञाओं को निरन्तर मानते आए थे। उन्होंने अचानक से अनाज्ञाकारिता करना आरम्भ क्यों कर दिया? गिनती की पुस्तक में इस्राएल के अनेक पापों के बारे में जानकारी में अध्याय 11 में की गई बुड़बुड़ाहट में हम उनके पहले पाप के बारे में देखते हैं। वास्तव में यह अध्याय पाप करने की कहानी का आरम्भ करता है जो अध्याय 25 तक निरन्तर चलती है।

बुड़बुड़ाना और तबेरा में आग का जलना (11:1-3)

[1]फिर वे लोग बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; अत: यहोवा ने सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी, और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी। [2]तब लोग मूसा के पास आकर चिल्लाए; और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई, [3]और उस स्थान का नाम तबेरा पड़ा, क्योंकि यहोवा की आग उनमें जल उठी थी।

आयत 1. बुड़बुड़ाना पहला पाप है जिसके बारे में वर्णन करना चाहिए। **फिर वे लोग बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे।** NIV इसका अनुवाद इस प्रकार करती है, "फिर लोग अपनी कठिनाइयों के बारे में बुड़बुड़ाते हुए यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे।" NRSV कहती है, "जब लोग अपनी विपत्तियों के बारे में यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे।" NKJV में लिखा है "जब लोग बुड़बुड़ाने लगे तो

यह सुनकर यहोवा को बुरा लगा क्योंकि उसने उनकी आवाज़ को सुना था।" NASB इस पद का अनुवाद अक्षरशः करती है।

उनके बुड़बुड़ाने के तरीके के बारे में कोई विवरण नहीं दिया गया है। सम्भव है कि उन्होंने भोजन के विषय में बुड़बुड़ाना आरम्भ ही किया हो। उनकी कुड़कुड़ाहट से यहोवा का **कोप भड़क उठा** इस कारण उसने **आग** भेजी जो **छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी**।

आयतें 2, 3. तब लोग ... चिल्लाए और निस्संदेह डर के कारण उन्होंने ऐसा किया और **मूसा** ने **उनके लिए प्रार्थना** की। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उत्तर दिया जिसके कारण **आग बुझ गई**। तब लोगों ने उस स्थान को **तबेरा** नाम दिया जिसका अर्थ है "जलन," **क्योंकि यहोवा की आग उनमें जल उठी थी**। अध्याय 33 में छावनी के ठहराव की सूची में तबेरा को शामिल नहीं किया गया है।

ऐसा कोई संकेत नहीं दिया गया है कि "छावनी के एक किनारे से भस्म करने वाली" आग ने वास्तव में किसी की हानि की हो। इसके स्थान पर इसने चेतावनी देने का कार्य किया। परमेश्वर ने प्रकट किया कि अगर वे नियमित रूप से बुड़बुड़ाते हैं तो वह उनके साथ क्या कर सकता है और क्या करेगा। अगर आग भेजने के पीछे परमेश्वर का यह उद्देश्य था तो इससे यह लक्ष्य पूरा नहीं हुआ। आगे लोग और भी कुड़कुड़ाते लगे।

लोग निरन्तर आज्ञाकारिता से "बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने वाले लोगों के समान" अनाज्ञाकारी बनने के लिए अचानक क्यों मुड़ गए जिसके बारे में अध्याय 1 से 10 तक प्रकट किया गया है? इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता। ऐसा हो सकता है कि गिनती के प्रथम 10 अध्यायों में उनकी आज्ञाकारिता सोने का बछड़ा बनाने के बाद परमेश्वर से प्राप्त दण्ड से रही हो जिसका रिकॉर्ड निर्गमन 32 में देखने को मिलता है। उस घटना के बाद निर्गमन का शेष भाग और गिनती के प्रथम 10 अध्याय लोगों को विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी रूप में प्रस्तुत करते हैं। फिर भी सोने के बछड़े के विनाश के बाद अनेक महीने बीत चुके थे। क्रमानुसार, निर्गमन और गिनती के मध्य, लैव्यव्यवस्था में व्यवस्था दिए जाने की घटना देखने को मिलती है। इस कारण हमें नोट करना चाहिए कि लैव्यव्यवस्था 10 और 24 कुछ इस्राएली लोगों के द्वारा किए गए पाप की दो घटनाओं का रिकॉर्ड प्रदान करता है। इस्राएली लोग ऊपरी तौर पर उस पाठ को भूल गए जिसे सिखाने का मन परमेश्वर ने रखा था। वे उसी प्रकार कुड़कुड़ाने की दशा की ओर लौट आए जैसी वे मिस्र से निकलने के समय रखते थे।

भोजन के विषय में बुड़बुड़ाहट (11:4-9)

4फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी वह कामुकता करने लगी; और इस्राएली भी फिर रोने और कहने लगे, "हमें मांस खाने को कौन देगा। 5हमें वे मछलियाँ स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे, और वे खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी; 6परन्तु अब हमारा जी घबरा

गया है, यहाँ पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता।" 7मन्ना तो धनिये के समान था, और उसका रंग रूप मोती का सा था। 8लोग इधर उधर जाकर उसे बटोरते, और चक्की में पीसते या ओखली में कूटते थे, फिर तसले में पकाते, और उसके फुलके बनाते थे; और उसका स्वाद तेल में बने हुए पूए के समान था। 9और रात को जब छावनी में ओस पड़ती थी तब उसके साथ मन्ना भी गिरता था।

आयत 4. मिली-जुली भीड़ के साथ मिलकर लोग और भी बुड़बुड़ाने लगे: **फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी वह कामुकता करने लगी।** "कामुकता करने लगी" का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है "किसी लालसा की पूर्ति के लिए लालसा करना"; अन्य शब्दों में, "[भोजन के लिए] उन्होंने तीव्र लालसा की।"[1] "मिली-जुली भीड़" (אֲסַפְסֻף, *'सेपसप)* के लिए ऐसा अनुमान लगाया गया है कि वे कुछ गैर-इस्राएली लोग थे। वे "मिली-जुली भीड़" का एक भाग थे (निर्गमन 12:38; देखें लैव्य. 24:10) जो इस्राएल के साथ मिस्र से निकल लाए थे। इन लोगों ने कहा कि वे मात्र मन्ना खाते हुए ऊब गए हैं और **माँस खाना** चाहते हैं।

आयत 5. मिली-जुली भीड़ ने यह दावा किया कि मिस्र में वे **मछलियाँ**, **खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन** के साथ पोषक तत्व और अनेक प्रकार के भोजन का आनन्द लेते थे। सम्भावित रूप से ये मछलियाँ नील नदी से पकड़ी जाती थी और सब्ज़ियाँ नदी के किनारे उगती थीं। यह मिली-जुली भीड़ "पुराने अच्छे दिनों" को वास्तव में जैसे वे थे उनकी तुलना में उत्तम मानती थी और दावा करती थी कि वे **मिस्र में** अपना भोजन **सेंतमेंत** प्राप्त करते थे। वे गुलामी के उस दर्दपूर्ण मूल्य को भूल गए जो उन्होंने चुकाया था।

आयत 6. प्रतिदिन के भोजन में **मन्ना** खाने से उनका **जी घबराने लगा** था। अब उन्होंने परमेश्वर के चमत्कारी और निरन्तर प्रबन्धन को भी तुच्छ समझा। लोग उस आशीष से ऊब गए जिसने एक समय में उनकी जिज्ञासा को जगा दिया था (निर्गमन 16:13-15, 31)। "मन्ना" शब्द इस्राएलियों के इस प्रश्न से आता है "यह क्या है?"

आयतें 7-9. मन्ना के वर्णन के साथ यहाँ पर कथन समाप्त होता है: **मन्ना तो धनिये के समान था, और उसका रंग रूप मोती का सा था ... और उसका स्वाद तेल में बने हुए पूए के समान था** (देखें निर्गमन 16:31)। "धनिया" एक वर्षीय जड़ी बूटी थी जिसके बीज खसखस अथवा तिल के बीज़ों के समान चटनी के रूप में प्रयोग में लिए जाते थे। "मोती" सम्भावित रूप से गोन्द के समान राल थी जो किसी मोती अथवा पत्थर का स्वरूप प्रदान करता था।

परमेश्वर ने प्रतिदिन अर्थात सप्ताह के छः दिन मन्ना उपलब्ध किया। इस्राएलियों को सब्त के एक दिन पहले दुगुना मन्ना एकत्रित करना होता था क्योंकि सातवें दिन कुछ भी दिया नहीं जाता था (निर्गमन 16:22-26)। **रात को जब छावनी में ओस पड़ती थी तब उसके साथ मन्ना भी गिरता था।** अगली सुबह **लोग इधर उधर जाकर उसे बटोरते** थे। मन्ना को खाने योग्य बनाने के लिए लोग उसे **चक्की में पीसते या ओखली में कूटते थे, फिर तसले में पकाते, और उसके**

फुलके बनाते थे।

अगर भोजन के लिए इस्राएलियों की बुड़बुड़ाहट एक समान लगती है तो इसका अर्थ है कि वे पहले भी अनेक बार ऐसा कर चुके थे। ऐसा ही बाद में भी उन्होंने फिर किया। गिनती 21:4, 5 में इस्राएलियों ने भोजन और पानी के लिए फिर से शिकायत की। लाल सागर पार करते ही वे अपने भोजन के लिए बुड़बुड़ाने लगे और मिस्र में अपनी विपरीत परिस्थिति के साथ तुलना करने लगे। तब परमेश्वर ने उन्हें मन्ना दिया जिसे वे अपनी शेष यात्रा के समय खाते रहे। इस अवसर का रिकॉर्ड निर्गमन 16 में रखा गया है और यह वही अध्याय है जो यह बताता है कि किस प्रकार यहोवा ने लोगों के लिए बटेरें उपलब्ध करवाई। निर्गमन 16 और गिनती 11 में वर्णन की गई घटनाओं के बीच की समानता यह सिद्ध नहीं करती कि (विभिन्न साहित्यिक स्रोत से लिए गए) ये दो अलग विवरण एक ही घटना को बता रहे हैं। इसके स्थान पर ये इस्राएल की एक ही समानता में बार बार पाप करने के स्वभाव को प्रकट करते हैं जिसमें परमेश्वर के लोगों के प्रति परमेश्वर के क्रोध को और अन्त में उसकी ओर से आने वाले दण्ड को अधिकता से समझा जा सकता है।

मूसा का प्रत्युत्तर (11:10-15)

[10]और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने अपने डेरे के द्वार पर रोते सुना; और यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी बुरा मालूम हुआ। [11]तब मूसा ने यहोवा से कहा, "तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों करता है? और क्या कारण है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया, कि तू ने इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला है? [12]क्या ये सब लोग मेरी ही कोख में पड़े थे? क्या मैं ही ने उनको उत्पन्न किया, जो तू मुझ से कहता है, कि जैसे पिता दूध पीते बालक को अपनी गोद में उठाए उठाए फिरता है, वैसे ही मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठाकर उस देश में ले जाऊँ, जिसके देने की शपथ तू ने उनके पूर्वजों से खाई है? [13]मुझे इतना मांस कहाँ से मिले कि इन सब लोगों को दूँ? ये यह कह कहकर मेरे पास रो रहे हैं, कि तू हमें मांस खाने को दे। [14]मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है। [15]और जो तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिससे मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊँ।"

आयत 10. आग से घबराकर (11:1) लोगों ने मूसा से निवेदन किया और उसने उनके लिए मध्यस्थता की। अब लोगों की बुड़बुड़ाहट बढ़ती जा रही थी और अत्यन्त वेग से बढ़ती चली गई जब तक **सब घरानों के आदमी अपने अपने डेरे के द्वार पर रोने नहीं लग गए**। इस अवसर पर मूसा का झुकाव परमेश्वर से मध्यस्थता करना नहीं था। पाठ्य कहता है कि लोगों की बुड़बुड़ाहट को सुनकर **यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी बुरा मालूम हुआ**।

आयत 11. मूसा परमेश्वर की ओर फिरा, इसलिए नहीं कि **लोगों** के लिए प्रार्थना करे परन्तु परमेश्वर से कह सके कि किस प्रकार वे उसके लिए एक **भार** हैं। वह समझ नहीं पाया कि परमेश्वर ने उसे इस्राएल का अगुवा बनने के लिए क्यों चुना क्योंकि यह एक ऐसा कार्य है जिसे प्रथम स्थान में वह करना नहीं चाहता था (निर्गमन 3:11; 4:10, 13)।

आयत 12. मूसा ने परमेश्वर से कहा कि लोगों के लिए वह ज़िम्मेदार क्यों है। आखिरकार वे उसकी **कोख में नहीं पड़े थे** अथवा उसने उनको **उत्पन्न नहीं किया था** जिस प्रकार एक महिला कोख में बच्चों को धारण करती है और उन्हें जन्म देती है। उसने परमेश्वर से पूछा कि **जैसे पिता दूध पीते बालक को** [अपनी] **गोद में उठाए उठाए फिरता है** वैसे वह उन्हें लेकर क्यों चले। इब्रानी महिलाएँ प्रायः अपने बच्चों को गोद में उठाए फिरती थीं परन्तु कभी कभी ऐसी महिलाओं को किराए पर बुलाती थीं जो उनके स्थान में बच्चों को दूध पिलाती थीं और उन्हें सँभालती थीं। यहाँ पर प्रयोग में लिया गया चित्रण निरन्तर देखभाल, पोषण और प्रबन्धन का विचार प्रस्तुत करता है (देखें 1 थिस्स. 2:7)।

आयत 13. मूसा ने हारा हुआ महसूस करते हुए और निराश होकर कहा, **"मुझे इतना मांस कहाँ से मिले कि इन सब लोगों को दूँ? ये यह कह कहकर मेरे पास रो रहे हैं, कि तू हमें मांस खाने को दे।!"** वह कह रहा था कि परमेश्वर ने उसे बहुत ही कठिन कार्य दिया है और लोगों की माँगें इतनी बड़ी हैं कि उन्हें पूरा नहीं किया जा सकता।

आयत 14. मूसा ने स्वयं को अकेला महसूस करते हुए कि जैसे परमेश्वर उसका साथ नहीं दे रहा हो, ऐसा कहा, **"मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है।"** आयत 12 में "भार" (נָשָׂא, *नासा')* शब्द का दोहराव गोद में उठाए फिरने से किया गया है और "शक्ति के बाहर" आयत 11 के विचार को दोहराता है।

आयत 15. मूसा ने यह कहते हुए अपने विरोध को समाप्त किया कि वह नेतृत्व के निरन्तर भार के नीचे दबे रहने के स्थान पर मरना पसन्द करेगा। वास्तव में उसने परमेश्वर से कहा कि वह उसका **प्राण ले ले**।

सम्भावित रूप से मूसा के इस प्रकार के आवेग से आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। इसका कारण यह है कि पुराना नियम में परमेश्वर के अन्य महान सेवक भी निराश हुए थे और उन्होंने इसी प्रकार के भाव प्रकट किए थे - अय्यूब (अय्यूब 3), योना (योना 4:3), एलिय्याह (1 राजा 19:4), और यिर्मयाह (यिर्म. 20:14-18)। हालांकि कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि इस घटना में मूसा ने पाप किया,[2] परन्तु यह अनुपयुक्त जान पड़ता है कि परमेश्वर निराशा को - यहाँ तक कि अन्तिम छोर में निराशा प्रकट करने वाले शब्दों को - पाप के रूप में गिनता है। इस स्थिति के विपरीत परमेश्वर ने इस समय मूसा को डाँटा नहीं।

परमेश्वर का प्रत्युत्तर: भोजन और आत्मा में से दिए जाने का वायदा (11:16-23)

[16]यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के पुरनिये और उनके सरदार हैं; और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ कि वे तेरे साथ यहाँ खड़े हों। [17]तब मैं उतरकर तुझ से वहाँ बातें करूँगा; और जो आत्मा तुझ में है उसमें से कुछ लेकर उनमें समवाऊँगा; और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा। [18]और लोगों से कह, 'कल के लिए अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें मांस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के सुनते हुए यह कह कहकर रोए हो, कि हमें मांस खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही में भले थे। इसलिए यहोवा तुम को मांस खाने को देगा, और तुम खाना। [19]फिर तुम एक दिन, या दो, या पाँच, या दस, या बीस दिन ही नहीं, [20]परन्तु महीने भर उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुम को उससे घृणा न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य में है तुच्छ जाना है, और उसके सामने यह कहकर रोए हो कि हम मिस्र से क्यों निकल आए?'" [21]फिर मूसा ने कहा, "जिन लोगों के बीच मैं हूँ उन में से छः लाख तो प्यादे ही हैं; और तू ने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस दूँगा कि वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे। [22]क्या वे सब भेड़-बकरी, गाय-बैल उनके लिए मारे जाएँ कि उनको मांस मिले? या क्या समुद्र की सब मछलियाँ उनके लिए इकट्ठी की जाएँ कि उनको मांस मिले?" [23]यहोवा ने मूसा से कहा, "क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं।"

आयतें 16, 17. परमेश्वर ने मूसा की दोनों समस्याओं के लिए प्रत्युत्तर दिया। मूसा ने सबसे पहले यह विचार प्रकट किया कि उस पर इतने लोगों का भार अधिक है; इस कारण परमेश्वर ने मूसा के लिए सहायक के रूप में **सत्तर पुरुष** उपलब्ध करवाए। उसने कहा, **"जो आत्मा तुझ में है उसमें से कुछ लेकर उनमें समवाऊँगा।"** अन्य शब्दों में, वह **इस्राएली पुरनियों में** से सत्तर पुरुषों को वही आत्मा दान के रूप में देने जा रहा था जो उस बड़ी जाति की अगुवाई करने के लिए मूसा की सहायता कर रहा था। इन सत्तर पुरुषों का काम यह था कि वे मूसा के साथ **लोगों का भार उठाएँ**।

आयतें 18-20. साथ ही, मूसा ने दृढ़ता के साथ कहा कि वह इतने बड़े समूह को माँस उपलब्ध नहीं करवा सकता। परमेश्वर ने यह कहते हुए उत्तर दिया कि वह शिकायत करने वाले लोगों के लिए **माँस** उपलब्ध करवाएगा - जो कुछ **दिनों** के लिए नहीं होगा परन्तु **महीने भर** के लिए होगा। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा कहा, **"फिर तुम ... उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुम को उससे घृणा न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य**

में है तुच्छ जाना है।" इन कृतघ्न, असन्तुष्ट लोगों के लिए परमेश्वर को माँस की जो आशीष उपलब्ध करवानी थी उसके साथ शाप भी जुड़ा हुआ था।

आयतें 21-23. जब मूसा ने प्रश्न किया कि परमेश्वर 6,00,000 लोगों के लिए इस प्रकार का वायदा कैसे पूरा कर सकता है तब परमेश्वर ने उत्तर दिया, **"क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है?"** और यह भी कहा, **"अब तू देखेगा कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं।"** इस प्रकार परमेश्वर ने ज़िम्मेदारी ली कि उसका वायदा पूरा होगा।

परमेश्वर के वायदे पूरे हुए (11:24-32)

[24]तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाईं; और उनके पुरनियों में से सत्तर पुरुष इकट्ठा करके तम्बू के चारों ओर खड़े किए। [25]तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें कीं, और जो आत्मा उसमें था उसमें से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया; और जब वह आत्मा उनमें आया तब वे नबूवत करने लगे। परन्तु फिर और कभी न की। [26]परन्तु दो मनुष्य छावनी में रह गए थे, जिनमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी आत्मा आया; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गये थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में नबूवत करने लगे। [27]तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को बतलाया, कि एलदाद और मेदाद छावनी में नबूवत कर रहे हैं। [28]तब नून का पुत्र यहोशू, जो मूसा का सेवक और उसके चुने हुए वीरों में से था, उसने मूसा से कहा, "हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे।" [29]मूसा ने उससे कहा, "क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता!" [30]तब फिर मूसा इस्राएल के पुरनियों समेत छावनी में चला गया। [31]तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आँधी आई, और वह समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई, कि वे इधर उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊँचे तक छा गईं। [32]और लोग उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे; जिसने कम से कम बटोरा उसने दस होमेर बटोरा; और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया।

आयतें 24, 25. परमेश्वर के वायदों की पूर्ति के लिए मूसा ने उसी प्रकार कार्य किया। उसने **प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाईं** और इसके बाद प्रथम वायदे की पूर्ति के लिए उन्हें एकत्रित किया। उसने **पुरनियों में से सत्तर पुरुष** इकट्ठे करके तम्बू के चारों ओर खड़े किए। परमेश्वर ने **अपना आत्मा** उनमें समवा दिया **और जब वह आत्मा उनमें आया तब वे नबूवत** [נָבָא, *nabaʾ*] **करने लगे**। हालांकि ऐसा उन्होंने **फिर और कभी नहीं किया**। उन पर आत्मा का ठहरना और उनके द्वारा नबूवत करना मात्र अस्थायी दान थे जिससे उनका परिचय "आत्मा के सामर्थ्य से भरे हुए अगुवों के रूप में स्थापित किया जा सके।"[3] आत्मा के द्वारा इस

प्रकार के सामर्थ्य को पाना और इसके परिणामस्वरूप पुरनियों के द्वारा नबूवत करना, शाऊल के द्वारा नबूवत करने (1 शमूएल 10) और पहली शताब्दी में चेलों पर पवित्र आत्मा के आने (प्रेरितों 2) की समानता के साथ है। आत्मा से भरे इन पुरुषों ने इसी समय से मूसा की सहायता इस प्रकार की जिससे उस बड़े समूह पर अगुवे के रूप में जो भार वह महसूस कर रहा था उसमें उसे आराम प्राप्त हो सके। पवित्रशास्त्र विशेष रूप में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं करवाता कि उन सत्तर अगुवों ने मूसा की सहायता करने के लिए क्या किया।

आयत 26. मूसा की सहायता करने के लिए जिनका चुनाव किया गया उनमें से सारे लोग बाहर नहीं आए; **एलदाद** और **मेदाद** शेष सत्तर पुरुषों के साथ तम्बू में जाने के स्थान पर **छावनी में ही रह गए**। फिर भी, **उनमें भी आत्मा आया और वे छावनी ही में नबूवत करने लगे**। एक आरम्भिक नोट विवरण देता है कि वे **उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गये थे** - अर्थात वे चुने हुए थे और सत्तर पुरुषों की सूची में उनका भी नाम था - **पर तम्बू के पास न गए थे**।

आयतें 27, 28. एलदाद और मेदाद के द्वारा नबूवत करने के बाद **एक जवान** दौड़ कर निवासस्थान तक गया और इसके बारे में मूसा को बतलाया। ऐसा विचार किया गया है कि आयत 27 में यह "जवान" **यहोशू** था जिसने आयत 28 में उन दो पुरुषों को **रोकने** के लिए मूसा से बलपूर्वक आग्रह किया।[4] इस प्रकार की पहचान असम्भव नहीं है क्योंकि जब यहाँ कहा गया कि "किसी जवान" (נַעַר, *ना'अर)* "तो यह लड़कपन से बढ़ते हुए पुरुषों (निर्गमन 2:6) से होते हुए किसी परिपक्व पुरुष (2 शमूएल 14:21) की ओर संकेत करने वाले शब्द हो सकते हैं।"[5] साथ ही निर्गमन 33:11 में यहोशू के लिए *ना'अर* शब्द काम में लिया गया है जब इस्राएली सीनै पर्वत पर छावनी किए हुए थे।

ऊपरी तौर पर, यहोशू इस बात से चिन्तित था कि मूसा से परे इस प्रकार आत्मा के भराव के अधिकार का प्रकटीकरण विद्रोह का संकेत देगा या विद्रोह की ओर अगुवाई करेगा या मूसा के लिए लोगों के आदर को समाप्त कर देगा। अपनी चिन्ता के अन्तर्गत उसने मूसा से बलपूर्वक आग्रह किया जो वे कर रहे थे वैसा करने से मूसा उन्हें रोक दे।

आयतें 29, 30. मूसा ने, **"क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता!"** तब फिर मूसा **इस्राएल के पुरनियों** समेत **छावनी में चला गया**। मूसा का व्यवहार फिलिप्पियों 1:15-18 में अपने शत्रुओं के प्रति पौलुस के व्यवहार के समान था।

एलदाद और मेदाद चुने हुए लोग होने के बाद भी आत्मा पाने के लिए चुने हुए अड़सठ पुरनियों के साथ पवित्रस्थान में क्यों नहीं पहुँचे? यहाँ पर मूसा कुछ कहता परन्तु फिर भी इस घटना में हम मूसा और हारून के अधिकार के विरोध में बाद के विद्रोहों का एक प्रथम संकेत देख सकते हैं (देखें अध्याय 12; 16; 17)। अगर एलदाद और मेदाद जानबूझकर मूसा के आदेशों को मानने से इनकार कर रहे थे तो मूसा ने उनके प्रति नम्रता की एक विशेष आत्मा प्रकट की (देखें 12:3)।

वह ऐसे लोगों का खंडन नहीं करता जो परमेश्वर के आत्मा का दान पाए हुए हों फिर चाहे वे उसके शत्रु ही क्यों न हों।

आयत 31. परमेश्वर ने लोगों की सोच से बढ़कर माँस उपलब्ध करवाने के द्वारा अपना दूसरा वायदा भी पूरा किया। **तब यहोवा की ओर से एक बड़ी ... समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई, कि वे इधर उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊँचे तक छा गईं।** इब्रानी शब्द, רוּחַ *(रूआख)*, का प्रयोग "आत्मा" (11:25, 29) के लिए और "आँधी" (11:31) के लिए किया गया है जो इन दो बातों को एक साथ जोड़ते हुए परमेश्वर के उस काम को बताते हैं जो उसने इस्राएल के लिए किया।

इस आयत में कुछ विवरणों की व्याख्या करना हमारे लिए कठिन है। विशेष रूप से यह कि "दो हाथ" का अर्थ क्या है? NASB अनुवादकों ने स्पष्टीकरण के लिए "गहराई तक" शब्द जोड़े। अनेक लोगों के साथ यह एक सहमतिपूर्ण व्याख्या है कि चिड़ियाँ उड़ती हुई समुद्र से निकली और दो हाथ के लगभग (लगभग तीन फ़ीट) ऊँचे तक समूह में छा गईं। फिर भी अन्य ऐसा सोचते हैं कि यह पद उस ऊँचाई की ओर संकेत करता है जहाँ तक बटेरें उड़ रही थीं अर्थात आँधी उन्हें इतना नीचे तक ले आई कि उन्हें पकड़ना बहुत आसान था। BSI CL कहती है कि "बटेरें ... भूमि की सतह पर दो-दो हाथ ऊंचाई तक उड़ती रहीं।" कठिनाइयाँ होने के बाद भी इस कथन का बिन्दु स्पष्ट है: परमेश्वर ने शिकायत करने वाले अपने लोगों को माँस उपलब्ध करवाने के लिए भरपूर मात्रा में बटेरें भेजीं।

आयत 32. वहाँ पर इतनी अधिक बटेरें थी कि लोग उठकर **उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर** बटेरों को बटोरते रहे। जिसने **कम से कम** बटोरा उसने **दस होमेर** (लगभग साठ बुशेल) बटोरा। जब उन्होंने बटेरें बटोर लीं तब उन्होंने उन्हें छावनी के **चारों ओर फैला दिया** जिससे उन्हें सूर्य की रौशनी में सुखाया जा सके। हेरोडोटस ने मिस्रियों के बारे में लिखा, "कुछ ऐसी मछलियाँ थी जिन्हें वे कच्चा ही खाते थे जो सूर्य की रौशनी में सुखाई हुई होती थी या उन पर नमक लगा हुआ होता था; बटेरों को भी वे कच्चा ही खाते थे।"[6] मिस्र में चार सौ वर्ष बिताने के बाद वहाँ की परम्परा के अनुसार इस्राएलियों ने भी ऊपरी तौर पर वैसा ही किया।

परमेश्वर का दण्ड (11:33-35)

33मांस उनके मुँह ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा, और उसने उनको बहुत बड़ी मार से मारा। 34और उस स्थान का नाम किब्रोथत्तावा पड़ा, क्योंकि जिन लोगों ने कामुकता की थी उनको वहाँ मिट्टी दी गई। 35फिर इस्राएली किब्रोथत्तावा से प्रस्थान करके हसेरोत में पहुँचे, और वहीं रहे।

आयत 33. इससे पहले कि लोग खाना समाप्त करते क्योंकि **मांस उनके मुँह**

ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे कि इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा और **उसने उनको बहुत बड़ी मार से मारा**। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अनेक लोग मारे गए हालांकि पाठ्य यह नहीं बताता कि कितने लोग मारे गए। इस प्रकार परमेश्वर ने लोगों को उनकी बुड़बुड़ाहट के लिए दण्ड दिया।

इस अनुभव ने यह वायदा किस प्रकार पूरा किया कि पूरे महीने भर इस्राएल माँस खाएगा? सम्भावित रूप से इसका उत्तर यह है कि जितनी बटेरें उपलब्ध करवाई गईं उन्हें खाते हुए जीवित रहने के लिए वे कम से कम तीस दिन के लिए पर्याप्त थी। गिनती 11:20 पूर्वानुमान नहीं देता परन्तु शायद 11:33 में भेजी गई महामारी का संकेत देता है। परमेश्वर के द्वारा महामारी भेजना उसके **कोप** के स्तर का और उसके कृतघ्न लोगों के साथ उसके धैर्य को खोने का साक्ष्य है।

हो सकता है कि हम इस सोच की ओर झुकाव रखें कि परमेश्वर की ओर से इस्राएलियों को दिया गया दण्ड उनके पाप के अनुसार बेमेल था। जब हम इस्राएल की बुड़बुड़ाहट के साथ सहानुभूति रखते हैं तब बाइबल के लेखक उनके साथ कोई सहानुभूति नहीं रखते। इस प्रकार बुड़बुड़ाना परमेश्वर को किस प्रकार क्रोध दिला सकता है? निश्चित रूप से परमेश्वर ने इनकी बुड़बुड़ाहट में निम्नलिखित पापमय स्वभाव देखा:

1. कृतघ्नता. वे भूल गए कि किस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें निरन्तर आशीष दी थी; फिर माँस के लिए इस प्रकार की लालसा "मन्ना के अनुग्रहकारी दान को अस्वीकार कर रही थी जो परमेश्वर ने ... लोगों को जंगल की यात्रा में भोजन के रूप में विश्वासयोग्यता के साथ उपलब्ध करवाया था।"[7]

2. विश्वास न रखना. उन्होंने वास्तव में विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है और उन्होंने अपनी देखभाल के लिए परमेश्वर की योग्यता पर सन्देह किया।

3. विद्रोही होना. अपनी बुड़बुड़ाहट के द्वारा लोगों ने "कनान में बसने के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के प्रति अपना विरोध" प्रकट किया।[8] वास्तव में परमेश्वर ने कहा कि उन्होंने "यहोवा को जो [उनके] मध्य में [है] तुच्छ जाना है" (11:20)।

वर्तमान में परमेश्वर ने अपने लोगों को निर्देश दिए हैं कि वे इस्राएल के समान बुड़बुड़ाएँ या कुड़कुड़ाएँ नहीं:

> परन्तु परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न न हुआ, इसलिए वे जंगल में ढेर हो गए। ये बातें हमारे लिए दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें ... और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा नष्ट किए गए (1 कुरि. 10:5-10)।

> सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो, ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो (फिलि. 2:14, 15)।

जंगल में उन कुड़कुड़ाने वाले लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के आधार पर हम जानते हैं कि हमें इस आज्ञा को गम्भीरता से लेने की आवश्यकता है!

आयत 34. बुड़बुड़ाने वाले लोगों की मृत्यु के कारण उस स्थान का नाम **किब्रोथत्तावा** पड़ा जिसका अर्थ है "तृष्णा की कबरें।" **जिन लोगों ने** माँस के लिए **कामुकता की थी उनको वहाँ मिट्टी दी गई।**

आयत 35. यह अध्याय इस प्रकार कहते हुए समाप्त होता है कि लोग वहाँ से प्रस्थान करके **हसेरोत** में पहुँचे, और कुछ समय तक वहीं पर छावनी किए रहे।

अनुप्रयोग

बुड़बुड़ाने का पाप (11:1-9)

लोगों का मूलभूत आचरण, विशेष रूप से समूह की परिस्थितियों में अनेक पीढ़ियों से एक समान रहा है। जब कभी किसी समूह में किसी प्रकार के बाहरी परिवर्तनों का परिचय दिया जाता है तब उनमें से कुछ लोग इसके विषय में बुड़बुड़ाना आरम्भ कर देते हैं।

गिनती 11:1-9 में दी गई कहानी अन्य घटनाओं से इसलिए अलग है क्योंकि लोगों के मध्य बाहरी तत्वों को परमेश्वर नियन्त्रित कर रहा था और शिकायत करने के लिए उनके पास कोई भी न्यायोचित कारण नहीं था। परमेश्वर ने उनके लिए सब कुछ किया था। आइए अब तक उसकी आशीषों का एक पुनरावलोकन करें: (1) उसने उन्हें सीमा पर कनानी सेनाओं से बचाने के लिए जंगल में रखा। (2) उसने उन्हें एक क्रमवार छावनी में संयोजित कर दिया था। (3) उसने अन्त में उनके भले के लिए अपनी व्यवस्था उपलब्ध करवाई। (4) उनके भोजन के लिए उनकी ओर से थोड़े परिश्रम के साथ खाने के लिए भोजन दिया। (5) उनके कपड़े फटे नहीं और न ही उनके जूते घिसे। (6) उसने इस्राएल के दिशा निर्देशन के लिए दिन में बादल का खम्भा और रात में आग का खम्भा उपलब्ध करवाया जिससे वे लक्ष्यहीन होकर भटके नहीं। (7) उसने वायदे के देश की ओर जाने के लिए उनकी अगुवाई की जो वह उनके वहाँ पर आगमन के तुरन्त बाद उन्हें देना चाहता था। वे लोग उस वायदे की पूर्ति से कुछ ही सप्ताहों की दूरी पर थे।

पाठ्य में यह नहीं बताया गया है कि सबसे पहले किसने शिकायत की परन्तु पहले दौर में किसी के बुड़बुड़ाने पर अन्य लोगों ने भी बुड़बुड़ाना आरम्भ कर दिया। वह बुड़बुड़ाहट एक सामान्य अशान्ति बन गई और इस स्तर तक पहुँच गई कि इससे मूसा पर असर पड़ा। उसने परमेश्वर से शिकायत की कि इस्राएल के अगुवे के रूप में उसका भार बहुत अधिक है।

उनकी शिकायतें एक निश्चित प्रकार के तरीके के साथ थी जिसका अध्ययन किया जाना चाहिए। शिकायत करना और बुड़बुड़ाना ऐसा आचरण है जो इस्राएल के लिए अनूठा नहीं है। नए नियम में चार से भी अधिक पद मसीही लोगों को उत्साहित करते हैं कि वे इस प्रकार का आचरण नहीं रखें और प्रेरितों के काम में कम से कम एक उदाहरण बताता है कि इसके कारण कलीसिया की शान्ति में

उपद्रव उत्पन्न हुआ। ये पद 1 कुरिन्थियों 10:10; फिलिप्पियों 2:14; याकूब 5:19; और यहूदा 16 हैं। उपद्रव का एक उदाहरण यूनानी विधवाओं की भावनाओं को अनदेखा करने में प्रेरितों के काम 6:1-4 में देखने को मिलता है।

जब हम कुड़कुड़ाहट और बुड़बुड़ाहट के मुख्य स्रोत की खोज करते हैं तो इसका स्रोत के रूप में हम शैतान और उसकी युक्तियों को पाते हैं। अदन की वाटिका में उसने इस सिद्धान्त का प्रयोग किया जिसका उद्धरण बाद में यीशु ने किया: "यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है ..." (मरकुस 3:24-26)। उसने इस्राएल के हृदय में इस प्रकार काम किया जिससे कनान की ओर कूच करने के समय उनकी एकता नष्ट की जा सके। उसने परमेश्वर की योजना के विरुद्ध विद्रोह और पाप की आत्मा उत्पन्न कर दी।

दण्ड से अप्रभावित एक आत्मा (11:1-4)। जब इस्राएल बुड़बुड़ाया तो इससे परमेश्वर क्रोधित हो गया। जब वे लोग परमेश्वर के प्रबन्धों से सन्तुष्ट नहीं हुए तो उसने छावनी के एक किनारे पर आग भेजी और लोगों की सम्पत्ति नष्ट होने लगी। वहाँ हो रहे नुकसान को रोकने के लिए उनका दुखपूर्ण विलाप बुड़बुड़ाहट से लेकर पश्चात्ताप में और परमेश्वर से निवेदन करने में परिवर्तित हो गया।

कुछ समय के बाद इस्राएल के मध्य एक अन्य समूह ने बुड़बुड़ाना आरम्भ कर दिया। लोगों पर यह बुड़बुड़ाहट उन लोगों के द्वारा लायी गयी जिसे मूसा "मिली-जुली भीड़" नाम देता है। यह मिस्र की गुलामी में से बचकर आए लोगों का एक समूह था जिसकी इस्राएल में कोई मीरास नहीं थी। ये लोग अन्य बन्दी जातियों के लोग थे जो जंगल में इस्राएल के पीछे मात्र भोजन और सुरक्षा के लिए चल रहे थे। इस्राएल की मीरास में इनका कोई वैध साझा नहीं था। अपने लोगों के लिए परमेश्वर की योजना में उनका कोई भाग नहीं था। वे लोग बिना किसी व्यक्तिगत निवेश के एक मुक्त सवारी का आनन्द ले रहे थे।

लाभों से अप्रभावित एक आत्मा (11:5-9)। इस्राएल की बुड़बुड़ाहट और लालसा ने उनको ऐसा बना दिया कि वे परमेश्वर के उन सब कार्यों को भूल गए जो वह उनके लिए करता आया था। जो मन्ना वे लोग खा रहे थे वह जीवित रखने वाला और पोषण देने वाला था। परमेश्वर ने उनके लिए ऐसी योजना नहीं रखी कि वे अपने शेष जीवन भर उसे खाते रहें। अगर वे विश्वासयोग्य बने रहते तो कुछ सप्ताहों में ही वे कनान की सीमा पर लगी उपज में से खा रहे होते। परमेश्वर ने अनुग्रहकारी होकर उनके लिए जो कुछ उपलब्ध करवाया उसका उन्होंने अपनी लालसा के कारण तिरस्कार किया। वे लोग मिस्र के मसालेदार भोजन को याद करने और उसकी लालसा करने लगे।

बीते कष्टों से अप्रभावित एक आत्मा (11:5, 6)। इस्राएल की लालसा ने उन्हें ऐसा बना दिया कि वे गुलामी की कड़ुवाहट को भूल गए। उनके पास खाने के लिए पर्याप्त मात्रा में रहा होगा परन्तु यह कोड़े की मार के अन्तर्गत था। अगर उन्होंने अपने वस्त्रों को उतारा होता तो उनकी पीठ के निशान उन्हें उस गुलामी की याद दिलाते जिससे वे स्वतन्त्र हो गए थे। एक लेखक ने कहा, "बीते समय को सदैव उत्तम समझते हुए याद किया जाता है फिर चाहे वह बुरा ही क्यों न रहा हो।"

लालसा और बुड़बुड़ाहट ने उन्हें ऐसा बना दिया कि वे वर्तमान की आशीषों को भूल गए। यह विश्वास करना कठिन है कि वे लोग अपने पुराने जीवन के अनुसार जीने के लिए वापस लौट जाना चाहते थे। पतरस याद दिलाता है कि जब लोग अपने मन में पाप करने के लिए समर्पित हो जाते हैं तब उन्हें उनके पुराने स्वभाव की ओर लौटने से कोई नहीं रोक सकता (2 पतरस 2:19-22)। जंगल की यात्रा कठिन थी परन्तु इसके पीछे यह झुकाव था कि यह कुछ समय के लिए हो।

प्रायः जब हम अपने जीवन में भाग्य के विषय में बुड़बुड़ाते हैं तब हमें चाहिए कि हम इस कहानी को याद करें। बाइबल बार बार याद दिलाती है कि इस्राएल के समान हम लोग यहाँ पर अस्थायी आधार पर छावनी किए हुए हैं (1 यूहन्ना 2:15-17; 1 पतरस 2:11)।

परमेश्वर के उद्देश्य से अप्रभावित एक आत्मा। परमेश्वर ने इस्राएल को अपने लोग होने के लिए बुलाया। वे लोग तब तक उसकी निज सम्पत्ति नहीं बन सकते थे जब तक वे मिस्र के स्वामित्व के अन्तर्गत थे। मात्र स्वतन्त्रता और परमेश्वर के दिशा निर्देशन के अन्तर्गत इस्राएल और परमेश्वर एक वाचा स्थापित कर सकते थे। परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से बुलाया जिससे वे एक नए देश में रहें, एक ऐसा देश जिसकी इच्छा और वायदा उसने उनके पूर्वज अब्राहम के लिए रखा कि वे उसे मीरास में पाएँ। वे लोग उस देश की ओर यात्रा कर रहे थे। इस्राएल के भाग में इस प्रकार की बुड़बुड़ाहट और कड़ुवाहट उस यात्रा को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती थी और उस उद्देश्य में बाधक थी जिसके लिए वे बुलाए गए थे।

मसीह में, परमेश्वर ने हमें उसके अपने लोग बनने के लिए बुलाया है। हम लोग पाप के बन्धन और गुलामी के जूए के अन्तर्गत उसके लोग नहीं बन सकते (रोम. 6:16, 17)। मसीह में पायी जाने वाली स्वतन्त्रता के अन्तर्गत ही हम परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बन्ध में आ सकते हैं (गला. 5:1)। परमेश्वर ने हमें एक नए और वायदे के देश, स्वर्ग में रहने के लिए भी बुलाया है। इस क्षण हम उस देश की ओर अपनी यात्रा के मध्य में हैं। तब आइए विचार करें कि बुड़बुड़ाहट, विभाजन, स्वार्थी अभिलाषा और कुड़कुड़ाहट किस प्रकार वायदे के देश की ओर हमारी यात्रा से हमें रोकती है। जब परमेश्वर ने हमारे लिया इतना किया है तो हम उसके या एक दूसरे के विरोध में कुड़कुड़ाने या बुड़बुड़ाने का साहस कैसे सकते हैं? यह ऐसा पाप है जो हृदयों को और मित्रों को विभाजित कर देता है और परमेश्वर के उद्देश्य को पराजित कर देता है।

निष्कर्ष। परमेश्वर ने हमें अपने अनुग्रहकारी प्रबन्धन के अन्तर्गत सन्तोष के साथ जीने के लिए बुलाया है। हमें उसके प्रति अपने व्यवहार की निकटता से जाँच करनी चाहिए। सम्भावित रूप से यह समय है कि हम उन सब आशीषों की गिनती करें जो परमेश्वर ने हमारे साथ बाँटी हैं। GMT

"क्या यहोवा का सामर्थ्य सीमित हो गया है?" (11:23)

हमारा पाठ्य एक प्रश्न पूछता है "क्या यहोवा का सामर्थ्य सीमित हो गया है?" अन्य संस्करण बहुत ही अक्षरशः हैं और इसका अनुवाद इस प्रकार करते हैं,

"क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है?" (RSV), परन्तु NASB के शब्दों में यह विचार अच्छी प्रकार से प्रकट किया गया है।

इस्राएल के साथ उसकी विशाल सामर्थ्य। सबसे पहले, हमें गिनती 11 में नोट करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर की सामर्थ्य सीमित नहीं है! हालांकि कार्य असम्भव लग रहा था परन्तु जैसा उसने कहा वैसा किया!

यात्रा के लिए तैयारी करने के बाद इस्राएल कनान की ओर बढ़ रहा था फिर भी उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वे उसी प्रकार बुड़बुड़ाने वाले लोग हैं जैसा वे मिस्र छोड़ने के बाद पहली बार रहे थे (निर्गमन 14:10-12)। वे बुड़बुड़ाए और परमेश्वर ने उनकी छावनी के एक छोर पर आग भेजी (गिनती 11:1-3)। तब उन्होंने शिकायत की कि उनके पास खाने के लिए एकमात्र भोजन मन्ना ही है; वे माँस खाना चाहते थे (11:4-6)।

उनकी बुड़बुड़ाहट ने मूसा को निराश किया जिसने इसके बारे में परमेश्वर से शिकायत करते हुए कहा कि परमेश्वर ने उसे एक असम्भव कार्य दे दिया है (11:10-14)। उसने कहा कि अगर वह अकेले ही यह कार्य करता रहेगा तो इतना दुखी हो जाएगा कि जीने के स्थान पर मरना पसन्द करेगा (11:15)। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह इस समस्या का निवारण करेगा। उसने मूसा को आदेश दिया कि वह सत्तर पुरुषों का चुनाव करे और कहा कि वह उस आत्मा में से उनमें समवा देगा जो उस पर है; तब वे मूसा का भार उठाने में सहायता प्रदान करेंगे (11:16, 17)। फिर परमेश्वर ने घोषणा की कि वह लोगों को खाने के लिए पर्याप्त मात्रा में माँस देगा (11:18-20)।

इस बिन्दु पर मूसा ने कहा,

> फिर मूसा ने कहा, "जिन लोगों के बीच मैं हूँ उन में से छ: लाख तो प्यादे ही हैं; और तू ने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस दूँगा कि वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे। क्या वे सब भेड़-बकरी, गाय-बैल उनके लिए मारे जाएँ कि उनको मांस मिले? या क्या समुद्र की सब मछलियाँ उनके लिए इकट्ठी की जाएँ कि उनको मांस मिले?" (11:21, 22)।

परमेश्वर ने उस समय हमारे पाठ्य के शब्दों के साथ उत्तर दिया: "क्या यहोवा का सामर्थ्य सीमित हो गया है? अब तू देखेगा कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं" (11:23)।

यह अध्याय आगे प्रकाशित करते हुए आगे बढ़ता है कि परमेश्वर ने जैसा करने के लिए कहा था वैसा किया। उसने इस्राएल के सत्तर पुरनियों में अपना आत्मा समवाया जिससे वे नबूवत करने लगे (11:24-26)। तब उसने छावनी के ऊपर बटेरें भेजी - वे इतनी थीं कि प्रत्येक जन भरपूर मात्रा में खा सके। (11:31, 32)। फिर भी परमेश्वर ने लोगों को उनकी बुड़बुड़ाहट के कारण दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ा। उसने उनको "बहुत बड़ी मार से मारा" (11:33)।

पूरे समय उसकी महान सामर्थ्य। दूसरा, हम इस प्रश्न पर सम्पूर्ण बाइबल के सन्दर्भ में विचार कर सकते हैं कि "क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है?" प्रत्येक

स्थान में बाइबल प्रकट करती है कि परमेश्वर सब कुछ कर सकता है और उसका सामर्थ्य असीमित है! परमेश्वर ने अपनी असीमित सामर्थ्य किस प्रकार प्रकट किया? (1) परमेश्वर ने अपनी महान सामर्थ्य सृष्टि में प्रकट किया जब उसने कुछ नहीं में से सारी चीज़ों की रचना की जो अस्तित्व में हैं। (2) जब परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया जो उस समय में प्राचीन निकट पूर्व में सबसे बड़ी सत्ता थी और तब उसने अपना असीमित सामर्थ्य प्रकट किया। (3) परमेश्वर ने अपनी अद्‌भुत सामर्थ्य यीशु के जीवन में और कार्य में प्रकट की जो वह शब्द था जिसने देह धारण की (यूहन्ना 1:14)। जब हम उस एकमात्र जन के द्वारा प्रकट की गई सामर्थ्य के बारे में सोचते हैं जो पानी पर चला, वह लहरों को आज्ञा देता है, बीमारों को चंगा करता है, रोटियों को गुणात्मक रूप से बढ़ा देता है, पानी को दाखरस में बदल देता है और मुर्दों को जिला देता है तो हमें अपने महान परमेश्वर की सामर्थ्य पर आश्चर्य करना होगा। (4) परमेश्वर की महान सामर्थ्य प्रारम्भिक कलीसिया में भी देखी जा सकता था जिसने सताव के बाद भी एक पीढ़ी के अन्तर्गत रोमी जगत को सुसमाचार सुनाया। (5) परमेश्वर की असीमित सामर्थ्य उस समय भी प्रकट होगी जब मसीह दुबारा आएगा: संसार नष्ट कर दिया जाएगा; यहाँ तक कि मसीह के शत्रु उसके सामने झुकेंगे और उसे "प्रभु" कहकर पुकारेंगे (फिलि. 2:9-11)। परमेश्वर की सामर्थ्य बहुत ही विशाल है, यह हमारी समझ से परे है!

इस समय उसकी महान सामर्थ्य। तीसरा, आइए आयत 23 के प्रश्न पर हमारे संसार के सन्दर्भ में विचार करें। नया नियम परमेश्वर की योग्यता, उसकी सामर्थ्य के बारे में बताता है (देखें इफि. 3:20, 21)।

वर्तमान में कौन सा कार्य करने की सामर्थ्य परमेश्वर रखता है? उसके पास सबसे घृणित पापी को बचाने की सामर्थ्य है। अगर मसीह उन लोगों को बचा सका जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया (देखें प्रेरितों 2), तो वह किसी को भी बचा सकता है - जिसमें आप भी शामिल हैं! परमेश्वर के पास वह सामर्थ्य है जिससे आपको इस योग्य बना दे कि आप मसीही जीवन जी सकें। मसीह आपको इस योग्य बना सकता है कि आप वह सब कर सकें जैसा वह चाहता है। फिलिप्पियों 4:13 कहता है, "जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" इस पद का आवश्यक रूप से यह अर्थ नहीं है कि हम अक्षरशः सब कुछ कर सकते हैं - अर्थात कोई भी व्यक्ति पन्द्रह फ़ीट की ऊँचाई से कूद सकता है। इसके स्थान पर इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमें इस योग्य बना सकता है कि हम वह सब कुछ कर सकें जिसके लिए उसने हमें बुलाया है। परमेश्वर कलीसिया को भी सामर्थ्य देता है कि वह बड़े काम कर सके। हमें विश्वास करना चाहिए कि जो परमेश्वर प्रथम शताब्दी की कलीसिया को असम्भव विजय दे सका वह अपनी वर्तमान की कलीसिया को भी इस योग्य बना सकता है कि वह बड़े काम कर सके।

निष्कर्ष। इस प्रश्न का उत्तर कि "क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है?" बल के साथ गिनती 11 में और बाइबल के शेष भाग में "नहीं" दिया गया है। फिर भी *कुछ* ऐसी बातें हैं जो परमेश्वर - जबकि उसकी सामर्थ्य असीमित है - नहीं कर

सकता क्योंकि वे सही नहीं हैं। "बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा नहीं हो सकती" (याकूब 1:13); "परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है" (इब्रा. 6:18; देखें 2 तीमु. 2:13; तीतुस 1:2)। क्यों? इसका कारण यह है कि परमेश्वर वे काम नहीं कर सकता जो उसके स्वयं के स्वभाव को अपवित्र करते हों। जैसा कि परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र है, पूरी तरह से भला है इसलिए उसका झूठा ठहरना अनहोना है। परमेश्वर ऐसा कुछ नहीं कर सकता जो उसके स्वयं के स्वभाव के विपरीत हो।

एक पवित्र परमेश्वर ऐसे लोगों को नहीं बचा सकता जो अपने पापों से फिरने के लिए तैयार नहीं हों! वह हमें हमारे पापों *से* बचा सकता है परन्तु हमारे पापों *में* नहीं बचा सकता! बचने के लिए, इस कारण, हमें - विश्वास और आज्ञाकारिता में परमेश्वर की ओर फिरते हुए उसके अनुग्रह और मसीह के लहू के द्वारा - मसीह में विश्वास करने, अपने पापों के लिए पश्चात्ताप करने, मसीह में विश्वास का अंगीकार करने और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के द्वारा अपने पापों से बचने की आवश्यकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 790. [2]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती: द थर्ड एण्ड फोर्थ बुक्स आफ मोजेज* (एबीलीन, टेक्ससः ए.सी.यू. प्रेस, 1987), 359. [3]एल्लन, 794. [4]यह एल्लन का विचार था. (उपरोक्त.) [5]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 215. [6]हेरोडोटस *हिस्ट्रीज़*2.77. [7]डेनिस टी. ओल्सन, "गिनती," इन *हार्पर्स बाइबल कमेन्ट्री,* एड. जेम्स एल. मेस (सेन फ़ान्सिसको: हार्पर और रो, 1988), 190. [8]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 107.